Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850
Impact Factor : 1.7604(UIF)
Volume-3, Issue- 2, March -2013 Available online at www. lbp.world

बौध्दकालीन शिक्षा संस्थानो का ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ. कैलास रामकृष्ण नागुलकर
सहायोगी प्राध्यापक , गुलाम नबी आझाद कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविदयालय
बार्शिटाकली जि. अकोला महा.

सार:

शिक्षा संस्थाओ की स्थापना मे बौध्दं धर्म की भूमीका महत्वपूर्ण रही है शिक्षा केंद्रो का प्रारंभ ही बौध्दं काल से माना जाता है। बौध्दं धर्म की स्थापना जनतंत्रवाद के सिध्दांतो पर हुई थी। जिसमे सर्वसाधारण व्यक्तीओ को उन्ही के भाषा मे धम्मं का उपदेश दिया जाता था। सामान्यंत: प्रारंभिक शिक्षा के लिये पाली शिक्षा संस्थाये तथा उच्चं शिक्षा के लिये संस्कृत शिक्षा संस्थाये स्थापित थी। साधारण उपासको के लिये भी शिक्षा संस्थाओ की आवश्यंकता प्रतिपादीत की है। अत: मठो की स्थापना हुई ये मठ बडे बडे शिक्षा विहारो के रूप मे परिवर्तित हुये। इन केंद्रो मे भिक्षु, भिक्षुणी एवं सामान्यं जनता सभी को विदया अध्ययंन के समान अवसर प्रदान किये जाते थे। विविध जनपदो से विदयार्थी आकर यहॉ निशुल्कं शिक्षा प्राप्तं करते थे। यहॉ तक कि चीन जापान तिब्बत तथा अन्यं पूर्वी व्दीपो से भी विदयार्थी बौध्दं धर्म का अध्ययंन करने यहॉ आते और यहॉ से अन्यं ग्रंथो का अनुवाद करके अपने देशो मे ले जाते थे। नालंदा और तक्षशिला यह शिक्षा संस्थांन तो विश्वंविदयालयो के रूप मे विकसित हुये थे। बौध्दंकालीन शिक्षा केंद्रो का प्रबंध जनतंत्र के सिध्दांतो पर होता था। प्राय कोई विव्दान भिक्षुही उसका प्रधान होता था। प्रत्येक विभाग जैसे प्रवेश परीक्षा, पाठयक्रम, छात्रावास, भोजन व्यवस्था, भवन निर्माण, चिकित्सा, पुस्तकालय तथा भिन्नं भिन्नं विषयो के लिये अलग अलग विभाग प्रमुख थे। 9 वी शताब्दी मे एक भिक्षु छात्र जो कि जलालबाद अफगानिस्तान का निवासी था और बिहार मे तीर्थ यात्रा के लिये आया था उसको विश्वंविदयालय का कुलपति नियुक्तं किया गया था। इसका अभिप्राय यह है कि स्थानीय या प्रांतीय भेदभाव की भावना लोगो के मन मे नही थी। इस प्रकार वे बौध्दकालीन सुसंगठित शिक्षा संस्थाये जो देश मे विहार और विश्वंविदयालयो के रूप मे स्थित थी देश की सभ्यंता की प्रमुख रीढ थी। भारत के जो भी सांस्कृतिक संबंध एशिया के विभिन्नं

देशोसे स्थापित हुए उनका श्रेय इन्ही शिक्षा संस्थाओ को है। प्रस्तुत शोध मे बौध्दकालीन शिक्षा संस्थानो का ऐतिहासिक दृष्टी से अध्ययंन किया गया है।

1.1 प्रस्तावना:

प्राचनी काल से शिक्षा का प्रारंभ हुआ था तब से ही गुरू और शिष्यं मे घनिष्टं संबंध था और दोनो एकही स्थान पर रहकर विदयाभ्यास करते थे, गुरूगृह ही विदयार्थीयो का शिक्षा केद्रं था। गुरू अपने विदयार्थी के व्यक्तीत्वं विकास पर व्यक्तीगत ध्यान देते थे। वास्तव मे अध्यात्मिक या दार्शनिक विकास के लिये शिक्षा के बाहय उपकरणो कि अपेक्षा विदयार्थी की आंतरिक प्रगती पर अधिक ध्यान दिया जाता था । शिक्षा की इस व्यवस्था के कारण प्राचीन काल मे सुसंगठित शिक्षा केंद्र स्थापित नही हो सके। वैदिक तथा उपनिषद साहित्य मे हमे ऐसे संघो और परिषदो का उल्लेख मिलता है जहॉ विभन्नं स्थानो से विव्दान आते थे और उच्चं कोटी के शास्त्रार्थ करते थे। जिन स्थानो पर गुरूकुल स्थापन हो गये थे वहाँ सामूहिक रूप से विदया अध्यंयन होता था। ये गुरूकुल सामान्यंत: गाँवोमे ही स्थापित थे। इसके अतिरिक्तं वनो मे भी गुरूकुलो की स्थापना हुई। परंतु ये गुरूकुल भी बौध्दंकालीन शिक्षा केंद्रो जैसे सुसंगठित और संचालित नही थे, बौध्दं धर्म के संपर्क मे आने के बाद हिंन्दुओ ने सुसंगठित शिक्षा संस्थाओ का निर्माण बौध्दंकालीन शिक्षा संस्थानो के आधार पर किया और विशाल मठो या मंदिरो मे शिक्षा दी जाने लगी। हिंदू राजाओ तथा प्रजाने शिक्षा के प्रचार के लिये इन मंदिरो को दान दिया, अंत: यह स्थान शिक्षा केंद्रं बन गये। यहाँ क्रमानुसार प्रारंभिंक व उच्चं शिक्षा प्रदान की जाती थी। इसके अतिरिक्तं कुछ स्थान ऐसे थे जहाँ विशेष प्रकार के शिक्षा केंद्र स्थापित हो गये थे इसमे तक्षशिला मे आयुर्वेद, धनुर्वेद तथा राजनियम कानून का अध्यंयन करने के लिये दूर दूर से राजपुत्र आया करते थे। उज्जंयिनी मे ज्योतिष्यं तथा काशी मे दर्शन व संगीत शिक्षा के केंद्रं थे। दक्षिण भारत मे भी कुछ शिक्षा केंद्रं स्थापित हो गये जैसे वीजापूर जिले मे सलात्गी गाँव मे एक विशाल संस्कृत विदयालय था। आगे चलकर इसकी इतनी उन्नंती हुई की इसमे 27 विशाल छात्रावासो का निर्माण करना पडा। इसके अतिरिक्तं दूसरा हिंदू शिक्षा का केंद्र इन्नायरम मे था जो 11 वी शताब्दी मे स्थापित हुआ था। तीरूमुक्कुदल मालकापुरम, धारा तथा पांडुचेरी अन्यं केंद्रं थे। अग्रंहार ग्राम भी प्राचीन हिंदू शिक्षा मे विशाल केंद्र था जिनकी स्थापना दक्षिणी भारत मे राजाओ व्दारा विव्दांन ब्राम्हणो के उपनिवेशो के रूप मे हुई थी। बंगाल के टोल भी इसमे उल्लेखनीय है। अंत: स्पष्टं होता है की, हिंदू शिक्षा केंद्रो की स्थापना बौध्दं केंद्रो के

अनुकरण के फलस्वरूप ही हुई थी। प्रस्तुत शोध मे बौध्दं कलीन शिक्षा संस्थानो का ऐतिहासिक अध्ययंन किया गया है।

1.2 शोध के उददेश :

1. बौध्दंकालीन शिक्षा संस्थानो का अध्ययन करना।
2. बौध्दंकालीन शिक्षा के स्वरूप का अध्ययन करना।
3. बौध्दंकालीन शिक्षा व्यवस्था का अध्ययन करना।

1.3 शोध प्रविधी:

प्रस्तुत शोध मे ऐतिहासिक शोध प्रविधी का प्रयोग किया गया है। बौध्दंकालीन शिक्षा संस्थान तथा प्राचिन कालीन प्रमुख शिक्षा केंद्रो के संदर्भ मे उपलब्धं व्दितीयक साधनो का प्रयोग प्रस्तुत शोध हेतू किया गया है।

1.4 विश्लेषण:

प्रस्तुत शोध मे बौध्दंकालीन शिक्षा संस्थाओको ऐतिहासिक दृष्टीसे व्दितीयक तथ्यो के आधार पर विश्लेषण किया गया है।

बौध्दकालीन प्रमुख शिक्षा संस्थान :

प्राचीन बौध्दकालीन प्रमुख शिक्षा संस्थानो का ऐतिहासिक विश्लेषण निम्नंवत किया गया है।

तक्षशिला:

बौध्दकाल मे उत्तंर भारत मे तक्षशिला यह प्रमुख शिक्षा केद्रं था। तक्षशिला प्राचीन काल मे गांधार प्रांत की राजधानी थी। किंतु इसकी स्थापना का इतिहास उसे भी अधिक प्राचीन है। रामायन मे लिखा है की राजा भरतने अपने पुत्र तक्ष के नाम पर उसे बसाया था। तक्षशिला भारत की उत्तंरी पच्छिम सीमा पर होने के कारण इस पर अनेक आक्रमण हुए, इन आक्रमणो के परिणाम स्वरूप समय समय पर इसका राजनैतिक स्वरूप बदलता रहा है। ईरानी, यूनानी ने इस पर आक्रमण किये है, अत: यह अनुमान किया जा सकता है की, राज्य परिवर्तनो के कारण यहॉ की शिक्षा का स्वरूप भी प्रभावीत हुआ होगा।

प्रारंभीक काल मे तक्षशिला मे शिक्षण का आधार परिवार प्रणाली था। यहाँ अनेक विव्दान आचार्य विदयार्थियो को शिक्षा प्रदान करते थे। इससे उत्तंरी भारत के लिये यह एक शिक्षा केंद्र हो गया था। बनारम, मिथला तथा राजगृह आदि स्थानो से विदयार्थी तक्षशिला आने का वर्णन जातकों मे मिलता है। तक्षशिला मे प्रधानत: उच्चं शिक्षा दी जाती थी। लगभग 16 वर्ष की शिक्षा के बाद विदयार्थी तक्षशिला पहुचते थे। वेदत्रयी, वेदांत, व्याकरण, आयुर्वेद, अठारहसिप्पं, सैनिक विदया, ज्योतिष विदया, कृषि, व्यापार, सर्पदंश चिकित्सा तथा तंत्र तक्षशिला के विशेष अध्यंयन विषय थे। व्याकरण पिता पारिग्णी तथा प्रसिध्दं चिकित्संक और शल्यं विशेषज्ञ जीवक यहॉ के विदयार्थी थे। तक्षशिला मे सीखने के लिये जाति पाति का काई बंधन नही था। तक्षशिला यवनों की संस्कृति से भी प्रभावित हुआ था, कुछ आचार्य वहॉ ग्रीक भाषा का शिक्षण तथा ग्रीक युध्दं का प्रशिक्षण भी दिया जाता था। भारतीय युध्दं कला के लिये तक्षशिला अत्यंत प्रसिध्दं केंद्रं था। यहाँ चिकित्साशास्त्र का अध्यंयन काल सात वर्ष था। अर्थशास्त्र के रचियता कौटिल्यं ने भी अपनी उच्चं शिक्षा यही प्राप्तं की थी। इस प्रकार कई शताब्दियो तक तक्षशिला ने अपनी ज्ञान ज्योति देश मे विस्तीर्ण की थी।

नालंदा :

बिहार प्रांत मे पटना से 40 मील तथा राजगृह से 7 मील दूर नालंदा प्रसिध्दं बौध्दं शिक्षा केंद्र था। प्रारंभ मे यह एक छोटासा गाँव था जिसका शिक्षा के क्षेत्र मे कोई महत्वं नही था, परंतु धीर धीरे एक शिक्षा केंद्रं के रूप मे इसका महत्वं बढता गया। महात्मा बुध्दं के प्रिय शिष्यं सारीपुत्र की नालंदा जन्मंभुमि होने के कारण इसका महत्वं बौध्दं भिक्षुओ मे अधिक था। सम्राट अशोक जब सारीपुत्र का चैत्यं देखने आये तो उन्होने एक विहार यहाँ बनाया। इस प्रकार नालंदा विहार के प्रथम संस्थापक सम्राट अशोक थे। ईसा की प्रथम शताब्दी मे महायान के विकास के समय से इस स्थान का महत्वं बढने लगा। चौथी शताब्दी तक यह स्थान शिक्षा की दृष्टी से भी प्रसिध्दं था। नागर्जुन तथा उसके शिष्यं आर्यदेव जो कि अनुमानत चौथी शताब्दी मे ही संबंधित थे दोनो ही विव्दान उस समय नालंदा मे रहते थे, उस समय तक नालंदा की ख्याती बढती जा रही थी। किंतु लगभग पाचवी शताब्दी तक भी हम यह नही कह सकते कि नालंदा भारत का सर्व प्रथम शिक्षा केंद्रं था क्योकी जब 410 इ. मे फाहयान यहॉ आया तो नालंदा का शिक्षा की दृष्टीसे अधिक महत्वं नही था। इसका वास्तंविक उत्थांन सन 450 ई. से प्रारंभ होता है। तत्पश्चांत लगभग तीन शताब्दियो तक यह उन्नंत्ती के शिखर पर रहा। सातवी शताब्दी मे जब

हयानसांग यहॉ आया तो उसने नालंदा को उन्नंती की पराकाष्ठां पर पहुँचा हुआ पाया। हयानसाँग के लेखो मे हमे नालंदा के महत्वं और वैभव का वर्णन मिलता है।

नालंदा का वास्तंविक उत्थान गुप्तं सम्राटो व्दारा हुआ। कुमार गुप्तं प्रथम 414-455 ई. ने वहॉ एक मठ बनाया। इसके उपरांत तथागत गुप्तं, नरसिंह गुप्तं बालादित्यं, बुध्दं गुत, वज्त्रं तथा हर्षने भी वहॉ मठो की स्थापना की थी। इन मठो के निर्माण से नालंदा का विस्तार बहुत बढ गया। ये ही मठ विश्वंविदयालय के प्रमुख भवन मे सम्मिलीत थे। संपूर्ण क्षेत्र एक विशाल व दृढ दीवार से घिरा हुआ था जिसमे एक प्रवेश व्दार था। इस व्दार पर ही व्दार पंडित का निवास स्थान था जो प्रवेश परीक्षा लेता था। व्दार मे प्रवेश करते ही सभामंडप दिखते थे, जहाँ विदयार्थियो को सामूहिक भाषण दिये जाते थे। ये भवन संघाराम के मध्यं मे स्थित थे। इसके अतिरिक्तं यहॉ 300 अध्यंयन कक्ष थे,जहॉ विदयार्थी शिक्षा प्राप्तं करते थे। विश्वंविदयालय के भवन निर्माण की कला अत्यंत उच्चं कोटि की थी। इस समय भारत वास्तु कला मे अव्दितीय था जिसकी प्रतिछाया नालंदा विहार मे देखने को मिलती। मुख्यं भवन इतना उच्चं था की उसका शिखर बादलो को चूमता था। यह भवन कही खंडो मे थे और इनकी मीनारे अत्यंत उचे थे। संपूर्ण भवन एक योजना के अनुसार बनाया गया था। आज भी जो नांलंदा के भग्नावशेष विदयमान है, उन्हे देखने से प्रतीत होता है कि उस समय इंजीनियरीग का उच्चं कोटी का था। इन भवनो के अतिरिक्त नीचे मैदान मे सुंदर व विशाल सरोवर बने थे, जिसमे नीलकमल कनक पुष्पो मे मिलकर सौंदर्य बढाते थे। इत्सिंग ने लिखा है कि वहॉ 10 से अधिक सरोवर थे, जिनमे विदयार्थी जलक्रिडा करते थे। इसके अतिरिक्तं उसी क्षेत्र मे एक विशाल पुस्तकालय था, जो 9 मंज्जिलो का था। इस पुस्तंकालय के तीन विभाग थे, जो क्रमशा रत्नंसागर, रत्नदधि और रत्नंरंजक के नाम से प्रसिध्दं थे। संपूर्ण पुस्तकालय को धर्म गंज कहते थे। इस पुस्तकालय मे सभी धर्मो, विषयो, कलाओ, विज्ञानो तथा कौशल्यो से संबंधित पुस्तको का संग्रह था।

नालंदा मे छात्रावार का भी समुचित प्रंबंध था। 13 मठ इस उददेश की पूर्ति के लिये बनाये गये थे, जिनमे विदयार्थी के निवास के लिये कमरे, इन कमरो मे विदयार्थीयो के सोने के लिये पत्थर की चौकी, पुस्तक रखने के लिये पटिया और दीपक रखने को दीवट का स्थान बना हुआ था। प्रत्येक चौक के कोने मे एक कुॅआ बना था। भोजन के लिये बडे बडे चौके बने हुए थे जिनमे भोजन पकाने के लिये विहार की और से सेवको का प्रबंध था। इन सबके भग्नावशेष खुदाई मे मिले है।

नालंदा मे विदयार्थीयो के भोजन, वस्त्र, शिक्षा और चिकीत्सा की व्यवस्था निशुल्कं थी। आज के विश्वविदयालयो मे विदयार्थियो के व्यंय और उनके शुल्कं आदी को देखते है, तो हैरान

हो जाते है, कि प्राचीन काल मे नालंदा मे 10000 विदयार्थी निशुल्कं उच्चं शिक्षा प्राप्तं करते थे। वास्तंव मे प्राचिन शिक्षा का उत्तंरदायित्वं राजाओ तथा प्रजा दोनो पर था, और दोनो ही मिलकर शिक्षा के लिये दान देते थे। नालंदा को 200 गाँव दान मे मिले थे, उस गाँव की आय से नालंदा का कार्य चलता था। इसके अतिरिक्तं भवन, भूमि और भोजन की व्यवस्था राजाओ व्दारा व्यंक्तिगत रूप से की जाती थे।

इत्सिंग जो नालंदा मे लगभग दस वर्ष रहॉ, उन्होने वहाँ की शिक्षा पध्दती तथा पाठयक्रम का वर्णन किया है। नालंदा महायान बौध्दं शिक्षा का प्रधान केंद्र होते हुए भी, वहॉ हीनयान, वैदिक शिक्षा तथा जैन धर्म की शिक्षा दी जाती थी। शास्त्रार्थ मे विजयी होने के लिये सभी धर्मो का तुलनात्मंक अध्ययंन किया जाय। वाद विवाद या शास्त्रार्थ वहॉ की शिक्षा प्रणाली का एक विशेष अंग था। जिज्ञासु के लिये यह आवश्यंक था कि, उसके व्दारा सभी धर्मो का गहन अध्यंयन करने के पश्चात ही दार्शनिक अनुसंधान किया जाय। इसके अतिरिक्तं वेद, वेदांत, व्याकरण, ज्योतिष, दर्शनशास्त्र, पुराण और चिकित्साशास्त्र का भी अध्यंयन नालंदा मे किया जाता था। नालंदा वास्तंव मे दर्शनिक शिक्षा का केंद्रं था।

विहार मे भिक्षुओ, आचार्यो और विदयार्थीयो का जीवन संयमित और सात्विंक रहता था। नालंदा के विदयार्थियो का संपूर्ण देश मे सम्मान होता था। प्रवेश के समय न केवल भारत से बल्कि विदेशो से भी विदयार्थी यहॉ अध्यंयन हेतू आते थे। चीन, जापान, कोरिया, तिब्बत तथा जावा एवं लडडा से असंख्यं विदयार्थी बौध्दं धर्म का अध्यंयन करने नालंदा आते थे। विदयार्थियो के व्यक्तिगत विकास का ध्यान रखा जाता था। लेखन कला इस समय तक पर्याप्तं विकसित हो चुकी थी। भाषण, वादविवाद, शास्त्रार्थ आदी के व्दारा ज्ञानवर्धन किया जाता था। इस प्रकार नालंदा विदया का प्रसिध्दं केंद्रं था जो कई शताब्दियो तक भारत मे ज्ञान के प्रकाश का प्रसार प्रचार करता रहा। भारतीय सभ्यंता का यह प्रतीक लगभग 800 वर्ष तक गौरवशाली जीवन के उपरांत 12 वी शताब्दी के अंत मे मुसलमान विजेता बख्तिया बर्व तराका शिकार हुआ। यहॉ के विशाल भवन तथा अमूल्य पुस्तंको को भस्मं कर दिया तथा भिक्षुओ और विदयार्थीयो का वध कर दिया था।

वल्लंभी:

वल्लंभी बौध्दंकालीन भारत का एक प्रसिध्दं शिक्षा केंद्रं था। यह मैत्रक सम्राटो की सन 475 से 775 ई. तक राजधानी था। यह शिक्षा के महत्वं की दृष्टि से नालंदा का प्रतिव्दंदी कहा जाता था। यहाँ पर विशाल मठ और विहार बने हुए थे। हांनसांग यहॉ आया तब वल्लंभी मे

लगभग 100 संघाराम बने हुए थे। इत्सिंग ने भी वल्लंभी को नालंदा के समान ही महत्वंशाली पाया था। यहॉ विभिन्नं स्थानो से विदयार्थी उच्चं शिक्षा के लिये आते थे। उच्चं शिक्षा प्राप्तं करने के उपरांत यह विदयार्थी राजदरबारो मे उच्चं पदो पर नियुक्तं किये जाते थे। वल्लंभी केवल धार्मिक शिक्षा केंद्रही नही था, अपितु यहा राज नियम, नीति, तथा चिकित्साशास्त्र का भी अध्यंयन किया जाता था। तथा बौध्दं धर्म की दूसरी शाखा हीनयान काभी भिक्षु अध्यंयन करते थे।

ईसा की 7 वी शताब्दी तक वल्लंभी शिक्षा के लिये प्रसिध्दी प्राप्तं कर चुका था। तथा पूर्व समुद्री व्यापार के लिये भी इसका बडा सहाय रहा। यहॉ बडे बडे व्यापारी धनवान व्यापारी रहते थे। यही व्यापारी शिक्षा के सरंक्षक के रूप मे कार्य करते थे। मैत्रको ने भी विश्वंविदयालय के पुस्तकालय को प्रधानता से समय समय पर अनुदान दिया था। इस प्रकार शिक्षा का प्रचार करते हुए वल्लंभी यह शिक्षा केंद्रं लगभग 12 वी शताब्दी तक स्थापित रहा। तदुपरांत विदेशियो के व्दारा इसका विध्वंस हुआ।

विक्रमशिला :

विक्रमशिला विहार की स्थापना सम्राट धर्मपाल ने 8 वी शताब्दी मे की थी। यह एक पहाडी के उपर गंगा नदी के तट पर मगध मे बसा था। कला की दृष्टी से विक्रमशिला विहार उच्चं कोटी का था। विक्रमशिला मे धर्म पालने शिक्षा कार्य हेतू कई विशाल कक्ष बनये, इन कक्षो के प्राचीरो पर सुंदर चित्र बने हुए थे।

विक्रमशिला की ख्याति शीघ्रं ही फैल गई। यहॉ के शिक्षक अत्यंत ही विव्दान और उच्चं कोटि के दार्शनिक थे। विक्रमशिला की ख्याति तिब्बंत तक पहुची थी लगभग चार शताब्दियो तक तिब्बंत के विदयार्थी विक्रमशिला मे उच्चंशिक्षा के लिये आते रहे। उन्होने यहॉ के संस्कृत के धार्मिक ग्रंथो का अनुवाद तिब्बंती भाषा मे किया और अपने देश मे जाकर इस संस्कृती का प्रसार किया। विक्रमशिला का प्रसिध्दं विव्दान दीपंकर श्रीज्ञान तिब्बंत गया था। वहाँ जाकर उसने धर्म प्रचार का कार्य किया था।

विक्रमशिला विश्वंविदयालय का प्रबंध उच्चं कोटी का था। शिक्षा का कार्य विव्दानो के एक बोर्ड पर था। ऐसा कहा जाता है कि यही बोर्ड नालंदा के शासन काल को भी चलाता था। शासन प्रबंध का अधिष्ठांता एक विव्दान भिक्षु होता था। कार्य के विभाग विभिन्नं अधिकारियो के नियंत्रण मे थे। विश्वंविदयालय मे प्रवेश के समय विदयार्थी की प्रवेश परीक्षा ली जाती थी। प्रमुख भवन की प्रत्येक दिशाओ मे व्दार थे और इन्ही व्दारो पर व्दार पंण्डित नियुक्तं थे। यही

व्दार पंण्डिंत प्रवेश परीक्षा लेते थे, जिसमे उतीर्ण होने पर ही विश्वंविदयालय मे प्रवेश हो सकता था।

इसके अतिरीक्त विक्रमशिला शिक्षा केंद्रं का ऐतिहासिक वर्णन हमे तिब्बंत के विदयार्थियो और इत्सिंग के लेखो से मिलता है। यहॉ पर प्रधानत: से सांसरिक विदयाओ का अध्यंयन किया जाता था। व्याकरण, तर्कशास्त्र, तंत्रवाद तथा दर्शनशास्त्र अध्यंयन के प्रमुख विषय थे। अधिक कौतूहल की बात तो यह है कि, इस विश्वंविदयालय मे परीक्षा के प्रमाणपत्र भी मिलते थे, जैसा कि अन्यं किसी प्राचीन कालीन भारतीय विश्वंविदयालय मे नही होता था। इससे प्रमाणित होता है कि इन विश्वंविदयालय का संगठन अधिक सुव्यंवस्थित था।

इस प्रकार एक दीर्घकाल तक विक्रमशिला शिक्षा केंद्रं की विदया साम्राज्ञी रही। 13 वी शताब्दी के प्रारंभ मे बख्त्यिार खिलजी ने युध्दं गढ समज कर आक्रमण किया और समस्तं भिक्षुओ और ब्राम्हंणो के सर काट डाले। पुस्तकालय की सभी पुस्तंको को जला दिया गया। जला ने से पूर्व जब उन्हे पढा गया तब उनको पता चला कि, यह तो एक शिक्षा केंद्र था। विक्रमशिला का अधिष्ठांता भिक्षु श्रीभद्रं तिब्ब्ंत पहुँच गया वहाँ उसने धर्म प्रचार का कार्य करना प्रारंभ कीया।

श्रोदन्तंपुरी :

मगध के पाल सम्राट के अस्तिंत्वं के पूर्व ही इस श्रोंदन्तंपूरी विश्वंविदयालयकी स्थापना हो चुकी थी। पाल सम्राटो के व्दारा इसका और भी अधिक विस्तार किया गया। उन्होने यहॉ एक बडे पुस्तंकालय की स्थापना की, जिसमे ब्राम्हंणीय और बौध्दं साहित्यं की पुस्तंको का संग्रह था। परंतु श्रोंदन्तंपुरी शिक्षा केंद्रं इतना ख्याति प्राप्त नाही था जितनी की विक्रमशिला तथा नालंदा यह शिक्षा केंद्रं थे, इस शिक्षा केंद्र मे लगभग 1000 भिक्षु निवास करते व शिक्षण का कार्य करते थे। बौध्दं धर्म के सिध्दांतो का प्रचार करने मे श्रोदन्तंपुरी का पर्याप्तं श्रेय रहा है। तिब्ब्ंत से भी विदयार्थी आकर यहाँ विदया अध्यंयन करते थे। इसी के आधार पर तिब्बंत को प्रथम बौध्दं विहार बनाया गया।

मिथिला:

मिथिला का प्राचीन नाम विदेह था। अनंत काल से यह ब्राम्हंणीय शिक्षा का केंद्रं था। राजा जनक यहाँ उपनिषद युग मे धार्मिक शास्त्रार्थ किया करते थे, जहॉ देश के भिन्नं भिन्नं भागो से विव्दान ऋषि आकर शास्त्रार्थ करते थे। बौध्दं युग मे भी मिथिलाने अपनी परंपरा का

निर्वाह किया। जगव्दंर नाम के विव्दांन जिसने गीता, टीका, देवी महात्म्यं, मेघदूत, गीत गोविंद तथा मालती माधव इत्यादि रचनाओ पर टीकी है, तथा कवि विदयापति जिनकी सरस कविताओ से बंगाल और बिहारके कवियो को युगोसे प्रेरणा ली है, वे मिथिला के ही विदयार्थी थे। 12 वी शताब्दी से लेकर 15 वी शताब्दी तक मिथिला विदया का एक महत्वपूर्ण केंद्र रहा। साहित्यं व ललित कलाओ के अतिरिक्तं यहॉ वैज्ञानिक विषयो का भी अध्यंयन होता था। न्याय का एक प्रसिध्दं विदयालय मिथिला मे था। गंगेश उपाध्याय ने नव्यं न्याय के स्कूल को जन्मं दिया। यहाँ पर उसकी युग निर्माणक रचना तत्वंचिंन्तांमणिक लिखी गई। मिथिला मे अनेक विव्दानो ने जन्मं लिया, यहाँ तक कि मुगल सम्राट अकबर के समय मिथिला विदया का एक प्रसिध्दं केंद्र था। मिथिला अखिल भारतीय ख्याति का शिक्षा केंद्र था। न्याय तथा तर्कशास्त्र के लिए यह विशेष प्रसिध्दं था। अध्यंयन समाप्तं होने पर यहाँ विदयार्थी की अंतिम परीक्षा लिए जाने की प्रथा थी, जो शलांका परीक्षा के नाम से विख्यांत थी। इस परीक्षा मे उर्तीण होणे पर ही स्नातक की उपाधि दी जाती थी।

नदिया :

नदिया या नवव्दीप बंगालके सेन सम्राटो के व्दारा 11 वी शताब्दी के मध्यं मे बसाया गया था। पूर्वी बंगाल मे भागीरथी तथा जलांगी के संगमपर प्रकृति की शोभा मे यह स्थान बसा हुआ था। आज भी इसके प्राचीन भग्नावशेष देखे जा सकते है। जो इसके अतीत के इतिहास की गौरव गाथा कहते है। समय समय पर यहाँ विव्दांनो ने जन्मं लिया है। जयदेव के गीत गोविंद की वाणी अब भी लोगो के कानो मे गूंजती है। उमापति की कविताये तथा शूल गाणिका स्मृति विवेक अमर रचनाये है। मुसलमान शासको के युग मे भी नदिया हिंदू शिक्षा का प्रसिध्दं केंद्रं रहा। तर्कशास्त्र, व्याकरण, नीति और कानून के लिये यह विशेष उल्लेखनीय है। नालंदा तथा विक्रमशिला का पतन होने से नदिया का महत्वं और भी अधिक बढ गया और वहॉ हिंदू शिक्षा का एक विशाल केंद्र स्थापित हो गया। रघुनाथ शिरोमणिक मिथिला मे न्याय व तर्कशास्त्र मे विशेषता प्राप्तं करने गये थे, वहॉ से तत्वंज्ञान चिंतामग्नि को कंठांग्रं कर लाया क्योकि मिथिला की वह जटिल परंपरा थी कि, वहॉ से किसी विदयार्थीको पुस्तंको, प्रतिलिपि और अनुवाद करने की ही आज्ञा नही थी।

इस प्रकार नदिया देश मे शिक्षा का प्रचार करता रहा। भव्यं युग मे भी इसका महत्वं रहा। आज कल यहाँ टोल पध्दती से प्राचीन शिक्षा दि जाती है। मनू 1816 ई. मे वहा 46 स्कूल और 380 विदयार्थी थे। किंतु सन 1818 ई. मे 31 स्कूल तथा विदयार्थीयो की संख्या 747 का

अनुमान वार्ड ने किया था। वार्डने जो 31 स्कूल पाये उसमे से 17 मे तर्कशास्त्र, 11 मे कानून तथा शेष 3 मे क्रमश्: काव्यं ज्योतिष्यं एवं व्याकरण का शिक्षण होता था।

जगददला:

बंगाल के सम्राट रामपाल ने 11 वी शताब्दी के प्रारंभ मे गंगा तट पर रामावती नामक नगर बसाया जहाँ उसने एक विहार बनवाया जिसे उसने जगददला के नाम से पुकारा। यह जगददला लगभग 100 वर्ष तक बौध्दं शिक्षा का केंद्रं रहा, और सन 1203 ई. मे मुसलमानो ने इसे नष्टं कर दिया। तिब्ब्ंत के विदयार्थियो ने भी यहॉ आकर संस्कृत के ग्रंथो का अनुवाद किया। यहाँ पर अनेक पंडित, महा पंडित उपाध्याय और आचार्य रहते थे। इसमे विभूतिचंद्रं दानशील शुभ्ंकर तथा मोक्षाकार गुप्तं अधिक प्रसिध्दं है। जगददला भी तर्कशास्त्र तथा तंत्रवाद के लिये उल्लेखनिय है।

1.5 निष्कंर्ष :

बौध्दंकालीन शिक्षा केंद्रो की भारत वर्ष मे तथा विदेशो मे काफी ख्यांती रही है। इन शिक्षा केंद्रो के व्दारा ज्ञान का प्रसार प्रचार देश तथा विदेशो मे काफी मात्रा मे किया है। तथा बौध्दंकालीन इन शिक्षा केंद्रो मे दि जाने वाली निशुल्कं शिक्षा, तत्कालीन छात्रावास, प्रवेश परीक्षा, पाठयक्रम इसमे आधुनिक काल कि तरह नाविण्यता पायी जाती है, इन शिक्षा केंद्रो का प्रबंध जनतंत्र के सिध्दांतो पर किया जाता था तथा विव्दान भिक्षुही इन संस्थानो का प्रमुख होता था। क्षमता तथा पात्रता के आधार पर इन शिक्षा केंद्रो मे स्थान प्राप्तं होता था किसी भी प्रकारका भेदभाव स्थानिक तथा प्रांतीय यहा नही था। केवल व्यापक अध्ययंन से विदयार्थीयो को तैयार करणा तथा इन्होन्हे प्राप्तं ज्ञान का प्रत्यक्ष जीवन मे प्रयोग तथा समाज के हितो की रक्षा करना रहा है। इससे स्पष्टं होता है की, तत्कालीन राजा तथा इन शिक्षा केंद्रं के भिक्षु शिक्षा के महत्वं के संदर्भ मे दक्ष रहे है। आज की शिक्षा प्रणाली उसी शिक्षा केंद्रो का प्रतिरूप मानी जाती है।

संदर्भ ग्रंथ :

- मिश्र, जयशंकर 1999. प्राचनी भारत का सामाजिक इतिहास. पटना :बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी.
- श्रीवास्तंव कृष्णंचंद्रं. 2004. प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति. इलाहाबाद :यूनाइटेड बुक डिपो.

- **सिंहकर्ण 2004. भारतीय शिक्षा का ऐतिहासिक विकास. आगरा :भार्गव बुक हाऊस.**
- **गुप्तं नत्थूलाल. 2005. प्राचीन भारतीय शिक्षा और शिक्षाशास्त्री. नई दिल्ली :राधा पब्लिकेशन्सं**